दूधनाथ सिंह की कहानियों में यथार्थ जीवन का भावबोध

सुमन शुक्ला

नेट
बक्शी खुर्द, दारागंज,
इलाहाबाद

आधुनिक हिंदी जगत में कहानीकार के रूप में दूधनाथ सिंह एक सफल कहानीकार सिद्ध होते हैं। इनकी कहानियों में आज के वातावरण व परिस्थितियों से उत्पन्न समस्यायें, मध्यम वर्ग के लोगो के जीवन की दशाएं इत्यादि का प्रतिबिम्ब स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। कुछ कहानियों में मानव के अपने सम्बन्धों का अजनबीपन पीढ़ियों का अन्तराल और उससे उत्पन्न तनाव, राजनीतिक भाव व अवमूल्यन, दफ्तरों की यांत्रिकता और भ्रष्टाचार, शिक्षा पद्धति की जड़ता, टूटते हुए मूल्यों की पीड़ा। यह सब कुछ सजीव रूप में झलक उठता है। आधुनिक जीवन में जो कुछ दिखाई दे रहा है और जो कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। उन समस्त तथ्यों का मानवीय संवेदना से युक्त होकर कुशल चित्रण किया गया है। समाज को बेहतर बनाने में जो मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है उन सबका एक विकल्प बनाने की ओर संकेत करते हैं।

आधुनिक जीवन में जो परिवर्तन आया है उनकी दृष्टि में ऐतिहासिक व राजनीतिक परिस्थितियों से अलग नहीं है। साठोत्तर कालीन कहानीकारों में दूधनाथ सिंह जी ने अपनी कहानियों में आधुनिक जीवन से टकराते हुए आज के मनुष्य के टूटने का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। उनकी कहानी में उनके अनुभवों की तीखी अभिव्यक्ति है। जहा एक ओर संवेदना का उपचार उनके प्रतिभा का उद्धोतक है वही दूसरी ओर शिल्प का मोह उन्हें एक प्रेम में जकड़ लेता है। दूधनाथ सिंह जी ने अपनी कहानियों में आधुनिक समाज के नए संदर्भो को इमानदारी से प्रस्तुत किया है। भाषा, भाव, सवेंदना, इत्यादि की दृष्टि से वे एक सफल कहानीकार हैं।[1]

डॉ0 विशम्भरनाथ उपाध्याय, दूधनाथ सिंह की कहानियों के सन्दर्भ में लिखते हैं– "दूधनाथ सिंह की कहानियों, अनुभूतियों के भंवर जाल के कारण नयी कहानी एवं आज के सपाट कहानियों के बीच की जान पड़ती है। 'स्वर्गवासी' में लेखक चाहता तो कमलेश्वर की 'खोयी हुयी दिशाओं' के नायक को अपनी तरह किसी औरत का स्वाद चखा सकता था। लेकिन उसमें यथार्थ की भयंकरता कुछ कम होने की आशंका थी।"[2]

इनकी कहानियां अपने अन्दर आधुनिकता का बोध को समेटे हुए है क्योंकि वह अपनी कहानी कें अतिंम अंश में पहुच कर उसे भीतर की ओर धकेलते है। उनकी कहानी 'सुखान्त' पर टिप्पणी करते हुए मधुरेश कहते हैं 'सुखान्त' में अमूर्तन और उलझाव की प्रवृत्ति बढ़ी है। इनकी कहानियों में जो व्यवस्था अंकित है वह कहीं पर अपने स्पष्ट एवं वास्तविक रूप में उपस्थित नहीं है। स्वर्गवासी का कृष्णलाल और विजेता कबन्ध और सुगन्ध में दुर्बोधता, अमूर्तन और शिल्प प्रयोग के प्रति अर्थहीन मोह जैसी चीजे उन्हें अकहानी की सीमा में लाकर एक

Scanned by CamScanner

नकली माहौल की नकली लडाई कहानियां बना देती है। हम लोग एक लम्बी दीवार अपनें सिरों और कन्धों को टक्कर से तोड़ रहे थे।[3] सुखांत की यह घोषणा अपने में बडी अस्पष्ट और अमूर्त सी है। यह न तो हम की व्याख्या करती है और न तो कंधे से तोड़ने की कोशिश की जा रही है। इस कोशिश का उल्लेख भर हुआ है। उसकी प्रकृति, प्रक्रिया और परिणाम कहानी में नहीं है।

दूधनाथ की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता अनुभूतियों एवं अभिव्यक्तियों की है। इनके यहां परिवेश की विसंगतियों का गहराई से तथा सूक्ष्मतापूर्ण अध्ययन करके उनकी अभिव्यक्ति यथार्थपूर्ण ढंग से करते हैं। उनकी प्रारम्भिक कहानियां तो अपने समकालीनो के सामान ही है। उनके द्वारा उसमें मध्यम वर्ग के परिवार के विघटनों का चित्रण किया गया है। 'स्वर्गवासी' कहानी के दूधनाथ सिंह ने मनस तत्व के सहारे वास्तविकता को एक नरक के रूप में प्रदर्शित किया है। यह कहानी एक निम्न, मध्यम वर्ग के एक बेकार युवक की कहानी है। यह युवक बेकार है, भ्रष्टाचार के कारण पटवारी की नौकरी से निकाल दिया जाता है। नौकरी की तलाश में अपने जीजा–जीजी के घर में रहने लगता है, जीजा–जीजी के घर तथा आस–पास के विघटित वातावरण को देखता हुआ वह उसी माहौल में बेहया की तरह रहता है। उस नरक में भी वह सुख की अनुभूति करता है। लेकिन यह ग्लानि उसे अस्थिर तथा विकृत बना देती है। सामान्य स्वस्थता किस प्रकार विकृत में परिवर्तित होती है उसका यथार्थ चित्रण हम स्वर्गवासी में देखते है।

'रीछ' दूधनाथ सिंह की एक चर्चित कहानी है। इसमें अतीत व काम ग्रंथ के द्वन्द का चित्रण यथार्थ रूप में किया गया है। इन दोनो में पीसते हुए 'रीछ' कहानी का नायक मनस्तापी हो उठता है। वह अतीत से पूर्ण मुक्त होना चाहता है। उससे मुक्त होकर वह निबोध यौन सुख भोगना चाहता है पर दमित अचेतन बार–बार सक्रिय होकर उसे हतास व कुंठित कर देता है। वह अपने अतीत से मुक्त नहीं हो पाता। व्यक्ति काम तृप्ति के समय रीछ की भाँति चित्रित किया गया है। कहानी का मैं जब कमरे में आता है, उसे यह महसूस होता है उसकी आहट पाते ही तहखाने की किवाड़ भयानक रूप से खरोचने लगता है और घुरघुराने लगता है। लगता है वह उसकी छाती के अन्दर फेफड़ों को लगातार खरोच रहा है। अब उसकी आँखों में पहचान एकदम खत्म हो गयी है। प्रस्तुत कहानी पति–पत्नी आपस में शरीर और सम्भोग के सम्बंध में खुलकर बात करते हैं। पत्नी नारी और पुरूष में अंतर को स्पष्ट करती है– स्त्री हमेशा नैतिक होती है। उसका अपना पति उसे रोज नया लगता है। पर तुम लोग.....।

'रीछ' कहानी का पात्र 'मैं' पत्नी से उन्मुक्त रूप से यौन सम्बंध करना चाहता है। पर वह ऐसा नहीं कर पता क्योंकि उसका अतीत उसका पीछा नहीं छोड़ता। अचेतन में छिपे अतीत के अन्य नारी के सम्बन्ध उसे पाप व अपराध की भावना से ग्रस लेते हैं वह डरता है कि कहीं उसकी पत्नी उसके अतीत के संबंधो को जान न ले। वह सोचता है, वह पत्नी को सब कुछ खुद ही बतला देगा या उस रीछ को वह स्वयं मार डालेगा। फिर सोचता है की वह अचेतन को दमित कर मुक्त हो जाएगा पर तभी उसे दमन–जन्य गम्भीर परिणामों की कल्पना परेशान कर देती है। इसलिए वह फिर अचेतन के दमन का विचार छोड़ देता है। व्यक्ति हमेशा अपने अतीत के साक्षात्कार से डरता है। इसका चित्रण दूधनाथ सिंह ने यथार्थ रूप में किया है।

Scanned by CamScanner

दांपत्य स्तर पर जागृत होने वाली कामचेतना को भी नयी कहानी ने कथा का रूप दिया है। युगों से जीवन और साहित्य में पुरूष प्रतिबद्धता की मांग करता है। पुरूषों के अनेक स्त्री–सम्बन्ध क्षम्य है। पर नारी यदि भूल से भी किसी पुरूष के साथ दिख जाये अथवा उसका स्पर्श भी हो जाए तो वह कुल्टा है, कलंकिनी है, यही इतिहासगत सत्य है। नये कहानीकार ने नारी, पत्नी नामक प्राणी के मनोविज्ञान को जगत सम्मुख रखा है। प्रतिबद्धता की आकांक्षा व मांग नारी में भी पुरूष के समान होती है। यदि उसे अपने अधिकार को बाटना पड़ता है तो अपनी भाववनाओं को परिस्थितियवश या स्वार्थवश दमित करती है। त्याग के नाम पर वह अपने मूल भावना को छिपा भले ही ले पर हर नारी इस भवना को दबाने के लिए तैयार नहीं है। वह पति को किसी अन्य स्त्री के साथ जाते देख लेती है तो वह स्वयं भी इसी तरह सम्बन्ध बनाने के लिए धमकी देती है– अगर मैने जान लिया ऐसा कुछ भी तुमने किया था, तो मैं भी तुम्हें दिखा दूंगी, तुम कल्पना भी नहीं कर सकते मैं एक क्षण में तुम्हारी पवित्रता की रट को तोड दूंगी। मैं किसी बहुत ही फूहड़ और नकारा आदमी के साथ–साथ।[4]

दूधनाथ की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता अनुभूतियों एवं अभिव्यक्तियों की है । इनके यहां परिवेश की विसंगतियों का गहराई से तथा सूक्ष्मतापूर्ण अध्ययन करके उनकी अभिव्यक्ति यथार्थपूर्ण ढंग से करते हैं। उनकी प्रारम्भिक कहानियां तो अपने समकालीनो के सामान ही है। उनके द्वारा उसमें मध्यम वर्ग के परिवार के विघटनों काचित्रण किया गया है। 'स्वर्गवासी' कहानी के दूधनाथ सिंह ने मनस तत्व के सहारे वास्तविकता को एक नरक के रूप में प्रदर्शित किया है।

दूधनाथ सिंह की कहानी 'आइसवर्ग' व्यक्ति के अवसाद, विषाद, अकेलेपन और खालीपन को चित्रित करने वाली है। सामाजिक अस्तित्व को तड़पते अकेले व्यक्ति की व्यथा इसमें मूर्त हुयी है। 'आइसवर्ग' व्यक्ति की सामाजिक कामना की कहानी है। परिवेश से पूर्वतः कट कर विघटित व्यक्ति को ढोता हुआ बलात समायोजन के कारण अन्दर से खोखला होता हुआ बाहर से शांत व्यक्ति की कारूणिक स्थिति का शिकार विनय है।[5]

दूधनाथ सिंह की 'विजेता' कहानी में अपने घिनौने और मायावी चेहरे को पकड़ने की कोशिश की गयी है। कहानी का 'मैं' कहता है– मैं जानता हूँ लेकिन भागता रहता हूँ और वह खूंखार दयनीय टूटता हुआ अपने ही नर प्रेत डर कर पीछा करते है। यह अपने भीतर का चक्रव्यूह है। जिसमे व्यक्ति सतत से संघर्ष रहता है। नर प्रेत एक प्रतीक है– अपने ही चारों ओर मडराते रहने का उन तमाम आत्म केन्द्रित प्रवृत्तियों का जिनके रहते वृहत्तर मानवीय आकांक्षा की बात बनाने लगती है, स्थितियां किस तरह आदमी से सच को झूठ में बदल देती है और आप चिल्लाते रहिये कोई यकीन नहीं करता। आदमी की वही विडम्बना है। मानवीयता किस तरह मेरा पीछा कर रही थी और मैं भाग रहा था। इस तरह यह कहानी बाहरी धरातल से एकाएक छलांग लगाकर अंतरंग धरातलों पर आ पहुँचती है। और आज के आदमी के विघटन व विसंगति की ओर संकेत करती है।[6]

इनकी कहानियों में यथार्थ भाव का बोध जैसे इनकी सुखांत का 'मैं' देखता है की मेरे शरीर पर जगह–जगह छोटे–छोटे हुए थे। गालों में, आखों कें इर्द–गिर्द पसलियों के बीच हड्डीदार कमर में, पगों में हरगढ़े बने जगह इन्हीं जगहों से मैं अपने को खाता जा रहा हूँ।

Scanned by CamScanner

लगातार वर्षों अनवरत/कुण्ठित चरित्रों की भाषा में उनके व्यक्तिगत की असमान्यताओं, कुण्ठाओं, ग्रंथियों का प्रतिरूप दिखलाई देता है। यह अपनी कहानियों में जीवन के हर पहलू को छूते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1 नयी कहानी अंक एक जून 77 सुरेश सेठ पृष्ठ 258
2 समकालीन कहानी की भूमिका डॉ विसंभर नाथ उपाध्याय पृष्ठ 35
3 हिंदी कहानी का विकास– मधुरेश पृष्ठ 130
4 रीछ– दूधनाथ सिंह, पहला कदम पृष्ठ 148
5 समकालीन कहानी की भूमिका डॉ विशम्भर नाथ उपाध्याय पृष्ठ 351
6 पहला कदम (कहानी संग्रह) दूधनाथ सिंह सपाट चेहरे वाला आदमी

Scanned by CamScanner